

ଶିକ୍ଷା ବା ସାହିତ୍ୟର ବାନ୍ଦଳକେ ଲାଦର୍ ହିନ୍ଦେରେ ପ୍ରଥମ କରେ ବାନ୍ଦଳ ଜାୟାତକୁ ବିଷୟକ ଗବେଷଣା ବିଧ
ପତଙ୍ଗେ ତ ମୁଁ ଏହି ଦିନକେ ଏହେ ବାକାଧିକ ଲାଭ ପୈଦାହେତେ ବା ପାଞ୍ଚମୀ ଥିଲେ ଯ କୁହୁର ଅନୁଷ୍ଠାନ ହର୍ଯ୍ୟାମେ ଏ ବିଷୟେ
ପ୍ରିସଟେର ଅବକାଶ ଦେବେ । କିମ୍ବୁ ଏହି ଜାତୀୟ ଗବେଷଣାକୁ ବାନ୍ଦଳର ଉତ୍ସାହାନ୍ୟାହ ଯେ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ଗୁରୁତ୍ୱ ପାଇଁ
ଏ କଥାର ଶ୍ରୀକାର ବା କରେ ଉପାଯୁ ଥାଇ ବା । ନାହିଁ ତର୍ହିଁ ଆହୁାହିଁ ପ୍ରିୟାରମଦୀ ସନ୍ତବତଃ । ଏହି ବାନ୍ଦଳର ପ୍ରବଳ
ଧୟାନ । ତୌରେ 'ନିଜୁମି ଶିକ୍ଷା ମାର୍ତ୍ତ ଅବ ଇମିମ୍ବା' ଗୁରୁତ୍ୱ ପରମ ପଞ୍ଚତନ୍ତ୍ର ପ୍ରମାଣ କରିବିଲେ ମଧ୍ୟ ତାବେ
ହଜେଂ ବାନ୍ଦଳ ଉତ୍ସାହାନ୍ୟାମେ ତ ପରିଚୟ ବିଭୂତ ହର୍ଯ୍ୟାମେ । ପ୍ରିୟାରମଦୀର ଖରେଂ ଏକାଧିକ ଗବେଷକ ବିଭିନ୍ନ
ତାବେ ବାନ୍ଦଳର ଏକାଧିକ ଉତ୍ସାହା ପରିଷର୍ତ୍ତ ଆନ୍ଦୋଳ ବା କରେଇବ । କିମ୍ବୁ ତଥା ସନ୍ତ୍ରେଣ ଏହି ବିଷୟେ ବିଧିବାନ୍ତ
ଏବଂ ପର୍ଯ୍ୟାନ୍ତ ଆନ୍ଦୋଳବାର ଅଭାବ ପୂର୍ବ ହୁଅବି ।

‘ग्रीष्मारपम् वा तदेषु यत्कर्ता परवै यक्षमेष्टः एवै विष्णुक् परम-स्वप्नं परवै यग्नी-कर्त्ते त एवामेचि वा वा पूर्वारप्तुष्य श्वसा एविष्टहै सक्तव यम्। तदै एवमात्र ऐच्छाप्तिक उत्त्येष्ट आजित्त एवै जातीयु कुतिष्ठु प्रतिविधिन्यावीयु परवै यग्नी-कर्त्ते त एवै ताताराम्पिक अ५३६ द्वै तालिका विष्ण्यै उपन्थापिक ह'न -

- | | |
|--------------------------------|---|
| १०१) डि.ए.ट्रिप्युटेशन | डोर्टमूंड वार्साएक्टे, जार्मनी अव दि
एसियुटिक सोसाइटि अव बेकाल, उत्तर-१६, पार्ट-१,
वार्साएक्ट-३, १८५६, नं १८६-१२६ |
| १०२) गुरुनाथ चन्द्र राय चौधुरी | उत्तराखण्ड देवीगुड़ी भाषा, पाहिला व द्वितीय विभाग,
प्रबन्ध संख्या, १०१६ बलाका |
| १०३) गुरुनाथ चन्द्र राय चौधुरी | काशीसामिहारी भाषा अभ्यर्थी व द्वितीय, पाहिला
व द्वितीय विभाग, चक्रवर्ती संख्या, १०१८ बलाका |
| १०४) यठीन्द्र मोहन चौधुरी | उत्तराखण्ड भाषागत वाक्यरूप, उत्तराखण्ड पाहिला व द्वितीय
विभाग, प्रबन्ध-चक्रवर्ती संख्या, १०१८ बलाका |
| १०५) गोवाल हाजीमार | ५ ट्रैक ट्रोडवटिक दुक्केच वाय दि द्वयामालि भाषाएक्टे,
व वार्साइट विक्टोर बेकाली, जार्मनी अव दि तिपार्टियन के
व व दोलोरम, उत्तराखण्ड देवीविभागिति, उत्तर-१९,
१९१९ |
| १०६) गोवाल हाजीमार | ५ ट्रैक विक्टोर गुरुनाथ अव दि द्वयामालि भाषाएक्टे व व
बेकाली, जार्मनी अव दि तिपार्टियन के व दोलोरम,
उत्तराखण्ड देवीविभागिति, उत्तर-१९, १९०० |

- (१६) दूसरा वर्ष अपार्सन शक
(१७) एस, पि, लोधुडी
- (१८) दृष्टिकोण द्वारा दी
(१९) एस, पि, लोधुडी
- (२०) दृष्टिकोण द्वारा दी
(२१) दृष्टिकोण द्वारा दी
- (२२) जलाशय उद्दीपनात्
(२३) खिरुमत्र जाहिडी
(२४) उः सुधीर कृष्ण करुण
- (२५) उपर्युक्त शिरोह लाघु
(२६) विजय विहारी उद्दीपनार्थी
(२७) उः विरचन मात्र
- (२८) उः विरचन मात्र
- (२९) उः सुधीर कृष्ण करुण
(३०) गुरुवर्ष शेष लाला
- (३१) उः विरचन कौशिक
- उद्दीपनी वालानारु लाला ठेस, उद्दीपन, १९०८
द्वारित्र्यन ये लालानारु लालानारु, इकियाम
लिङ्गुडिपिंडिक, उद्दीपन-१, १९०९
लिङ्गुडिपिंडिक द्वारित्र्यन ये लालानारु, इकियाम
लिङ्गुडिपिंडिक, उद्दीपन-१, १९०९
वर्ष द्वारित्र्यन लालानारु, १ लालानारी, इकियाम
लिङ्गुडिपिंडिक, उद्दीपन-१, १९०९
लिङ्गुडिपिंडिक द्वारित्र्यन हिंडियारु द्वारित्री,
इकियाम लिङ्गुडिपिंडिक, उद्दीपन-१, १९०९
गुरुमिहा लेनारु गुरुमि लालानारु, गुरुमिहा, १९०९
लिंगुडि लालानारु गुरुमि, गांगा, १९६१
मात्र लालानारु श्वेत लीलानारु लालानारु,
पि, पि, एस, पि, लालानारी, उद्दीपन-१, १९६१-१,
१९६०
- १ शिक्षण लालानारु, अब द्वारित्री, पि, पि, एस, पि,
लालानारी, उद्दीपन-१, १९६१-१, १९६०
महिन-पक्षिय लालानारु उपतावा, लाला लाहिका
पतिका, कलिकाता विमुखी प्राचीन, गुरुमि वर्ष, १९६८
उक्तव्यलाला लालानारु लाला, विमुखी पतिका,
विमुखी, १९५०
- उक्तव्यलाला उपतावा उपतावा उपतावामिक गुरुमि, गुरुमि,
लालानारी, उक्तव्यलाला लालानारी, १९५५
"लालानारु" जोकियामा & "महिन-पक्षियी वालानारु",
गुरुमि, लालानारी, उक्तव्यलाला लालानारी, १९५५
द्वारित्री लालानारु लालानारु उपतावा ये लिंडिक,
अब लालानारु, लोहानी इनिलालानारु, १९६०
(गुरुकामिक गुरुमिहा विवरण)
गुरुकामिक गुरुमिहा उपतावा लालानारु, लाहिका प्रियंग
पतिका, कलिकाता, १९५८

ମହାରାଜୁ ଯେ ଉପରେ ପ୍ରଦତ୍ତ ତାଲିକାର ଅନ୍ତର୍କୃତ ପ୍ରସ୍ତ୍ରୟ ଏବଂ ୫ ଗ୍ରାମୀଯ ଆମୋଡ଼ନା ଦୋଷୋ ଦୋଷୋ ଉପତ୍ତାଧାର ବା ଆଧୁନିକ ତାଥାର ଦୋଷୋ ଏକଟି ବିଶେଷ ବିଷଟ୍ଟ ଘଟନାରେ ପରିବାବ ଦ୍ୱାରା ଦୋଷୋ ଏକଟି ଉପତ୍ତାଧାର ପୂର୍ଣ୍ଣତା ଦୈଶ୍ୟକୌଣ୍ଡିଳ ପରିଚୟ ଏଗୁଳିଛେ ବିଶ୍ଵତ ହୁବି । ଅଥବା ଏକଟି ତାଥାର ପୂର୍ଣ୍ଣତା ପରିଚୟ କୁଟେ ଧରିବା ହଜାର ତାର ଉପତ୍ତାଧାରପୁଣ୍ୟ ସମାକ ପରିଚୟ ଦେଖ୍ୟା ପଢ୍ୟେଇବ । ବିଶେଷ ତାବେ ଉପରିବଳେ ଉପତ୍ତାଧାର ସମ୍ପର୍କ ତାଥା- ବିଜ୍ଞାବ ସମ୍ବନ୍ଧ ଅନ୍ତର୍ବଳେ ଯାର ବିଷୟଟି ଯେ ଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଉପେକ୍ଷିତ ଉପରେର ତାଲିକାଯୁ ତା ଏ ଶକ୍ତି

(উভয়বঙ্গের উপভাবার ইতিহাসিক পুরুষ সর্বশেষ জৈলের পাদী গাছ। বাংলা ভাষাভঙ্গের আনোচনায়, প্রাচীব ও মধ্যবাংলার বৈশিকি বিধানে ভাষাভাস্তুমের বিরুদ্ধে কঠত হয় প্রথমতঃ প্রাচীব ও মধ্যবাংলার কলিপ্য সাহিত্যক বিমর্শ, যথা-চর্চাখন, প্রীতি-কাবীর্ণ ইত্যাদির উপরে। কিন্তু একথা অস্বীকার্য দে সাহিত্যের ভাষা সর্বসম্মে, সর্বজাত মুখের ভাষা দেখে কিন্তু অস্বীকার্য দে সাহিত্য-কর্তৃর ভাষায় শক্তির বাহিনী, অনেক ক্ষণ এবং যার্দনার কাপ পড়ে, এলেকে মুখের ভাষাকে পিছে ও সর্বজনীন মুখ দেওয়ার চেকাও বলবৎ বাঢ়ে। সুতক্ষার প্রাচীব ও মধ্যপ্রাচীর বাংলার উদ্বিগ্নিক বিমর্শসম্পূর্ণের ভাষা দে কঠকালীব বাংলাসম্মের সাধারণ জনসমষ্টির মুখের ভাষা দেখে অস্বীকার্য হয়ে পড়েছিল একথা দেখে অর্থস্থ দ্যবে পিছে হয়। কলকাতা এই সম্মত বিমর্শের ভাষাকে আমর্শ দিলেখে প্রথম করে প্রাচীব ও মধ্যবাংলার বৈশিকি বিধানের প্রচারক দে অস্বীকৃত দেখে গিয়েছে একথাও না দেখে উপায় পাওক যা। বলা দেখে পাওক দে প্রাচীব ও মধ্যবাংলার কথা বা মৌখিক বিমর্শের অভাবই বাংলা ভাষাভঙ্গের আনোচনার এই বাংশিক অস্বীকৃতার মূল কারণ।

এছে দে উকুজবঠাৰ উপভাষা এই মৌখিক বা কথা বিশৰ্জনেত অন্তৰ খুজলৈ সহয। কাহুল এই
উপভাষা ঐতিহাসিক ও ১ মৌলোনিক কাহুল বিশৰ্জনেত একটি বিশেষ স্তুতি পর্যন্ত পৌঁছে আড় অগ্রসর
হতে পারেনি। কলতা প্রাচীন ও যথায়াৎক্রম অন্তৰ বহু উপভাষাৰ এই উপভাষাতো অধিবক্তৃ বৰ্তমান।

ଅମୋଡ଼ ଉପତ୍ତାବାଟିକେ ପ୍ରାଚୀନ ଓ ସଧାବାନୀର ନିର୍ମାୟକ ହୈ ଥିଲୁଣ୍ଠାନ୍ତିରୁହ ଜାଗଦେଶ ଶରୀରଙ୍ଗୁ ଏହିସ ଲିଖ
ହେଲେ -

आठीव वारसाड निर्मल वरदते एवं वह चर्चाप्रदक्षिणे हृषीकेशदेवा इत्युपात्रः । एवं दक्षे चर्चाप्रदेव जगते इ
शुभिगत ओ शुभगत नास्त्वा शुभमर्त्तवेत् युद्धे उत्तमवर्णजाग्र उत्तमावाहु आठीव वारसाडैवे शिरोमध्यै उत्तम
कर्त्ता इत्येत् ।

କେ) ମୁର୍ଦ୍ଦୟାନ୍ତିର ଏବଂ ମୁର୍ଦ୍ଦୟାନ୍ତିର ସାରକା ଉପରେ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ହିଲ ବାବାନ୍ତକାଙ୍କ୍ଷା ଉପରେ ମୁକ୍ତ ବାଚାଯାନ୍ତିରରେ ମୁକ୍ତା ଏବଂ ମୁର୍ଦ୍ଦୟାନ୍ତିର ସାରକାରର କାଳରେ ଶ୍ରଦ୍ଧାରୀ ଦେବେ । ସାଥୀ- ସାଥୀ ଏବଂ ମାତ୍ର ଏବଂ ମାତ୍ର ।

(६) चर्यापु ओडुड नहिं हैने व्यक्तिगति वा राष्ट्राभ संगठन के दृष्टीकोण परिवार पाल्या थाएँ। अधिकारीद्वारा लालोडा उपलब्धाप्राप्ति व्यक्तिगति प्राप्ति दियुविल तरह बढ़ते रहते। यथा-८ भन्देश्वर, १८५४, इस्तोत्र १८८३ इतापि।

(কে) চর্যাপি 'সকল' ইত্তানি বিশেষণ এবং 'জাত', 'জোড়' ইত্তানি সমষ্টিবাচক শব্দ। যোগে
বহুবচনের মূল পটভূমি হয়েছে। যথা- সকল সমাজিক, জোড়ে জাত ইত্তানি। উভয়বচনের উপরাংশে
এই পদ্ধতিতে 'বাস্তু' ইত্তানি যোগে বহুবচনের মূল পটিক্ষণ হয়। যথেষ্ট- চ্যালেক্ষন, 'বেজেজা', বাবুজ,
বাজু, 'বাসজা', কার্ডিওপেট, বর 'হাসেজা' ইত্তানি।

(୬) ପଦେର ମୁକୁତିଙ୍କ ନିଷ୍ଠେ ବହୁବଳରେ କୃଷ ଗଠିବ ଚର୍ଚାରେ ଆଜି ଏହାଟି ଉତ୍ସୁକରେଣା ହେ ଲିଖିଛି । ବିଶେଷତଃ ଶ୍ରୀମତୀ ପୁରୁଷେନ ଏବଂ ୯ ସାଲେର ଶର୍ମିବାବେଳେ କାହାରେ ଏହି କାଣ୍ଡୀଙ୍କ ପ୍ରତ୍ୟୋଗ କରିବା ହେଉଥିଲା । ଦେଶରେ କରି ଦେଇବା, ଦେଇ ଦେଇ ଦେବା ଇତାମି । ଉତ୍ସୁକରେଣାରୁ ଉପଚାରକାଳେ ଏହି କାବେ ଶ୍ରୀମତୀ ପୁରୁଷେନ ଏବଂ ୯ ସାଲେର ଶର୍ମିବାବେଳେ କାହାରେ ପଦେର ମୁକୁତିଙ୍କ ନିଷ୍ଠେ ବହୁବଳ ଆଖିବ କରାଯିବ । ଦେଶରେ କାନ୍ଦୁ-କାନ୍ଦୁ 'ପାତା', କାନ୍ଦୁ କାନ୍ଦୁ'ଭାତା' ଇତାମି । ଉତ୍ସୁକରେଣା ହେ ଅନ୍ତରୀଳ ଉପଚାରାଟିତେ 'କାନ୍ଦୁ' ଏବଂ 'ଭାତା', ଏହି ମୁଣ୍ଡି ଶର୍ମିବାବେଳେ କାହାରେ ପଦେର ମୁକୁତିଙ୍କ ବାତିରେଇ ବହୁବଳରେ କୃଷ ଗଠିବ କରିବ ବୟା ।

(ग) गोपवार्ता वक्तुवचनेत्र श्रद्धालु कर्त्तव्य वक्तुवचनस्थि । यथा - तृष्णि वासिनीय, तृष्णि वासिनीय, तृष्णि वासिनीय इत्यादि । उत्तरवचनेत्र उत्तरवाचनेत्र गोपवार्ता सर्वदाहि वक्तुवचनेत्र श्रद्धालु नहीं । यथा - त्रिवेदी वापनि, इष्ट वा 'वापनि', उत्तर वा 'हिन्दि', उत्तराय वा 'वापनि' इत्यादि ।

(୧୨) ଚର୍ଯ୍ୟ ବିଲିଙ୍କ କାହାରେ ବାବହଳ ପିଠିଲିଙ୍ଗିଲୁ ମଧ୍ୟ ପିଞ୍ଜାପ -

कर्त्ता -	मूली, व	यथा - दृष्टिरे १, जोरे निः । चर्या संख्या - २
कर्त्ता -	क	यथा - उत्तुरुक विविविला । चर्या संख्या - १२
सम्मान -	क, नाहि	यथा - उत्तु शिष्ठ नाहि । चर्या संख्या - ७७
सम्मान -	क	यथा - इतिनीज निलव । चर्या संख्या - ६
अविकृत -	क	यथा - वास्त्रित तात नाहि । चर्या संख्या - ३०

उत्तिविल विचित्रभूमि उत्तरवलोऽरुपतायाम् अठिनु ॥ 'तुष्टुष्टु' वीर्यक अवायाम् ॥ समार्थ विचालित आनोचना तुक्तेवा ॥

(८) न्यौद्योगक प्रत्ययगुणि चर्या एव ॥ उत्तरवलोऽरुपताया, उत्तुष्टुष्टु अठिनु । देवन-

चर्या - नवह, नवही (चर्या संख्या - ००), निवास, निवास, नृष्टिनी (चर्या संख्या - ०), ०००,

उत्तरवलोऽरुपताया - वाऽटी, वाऽटी 'तुष्टुष्टु', 'नी', वायोम्, वायम् 'तुष्टुष्टु', 'तुष्टुष्टु' इत्यापि ।

(९) उत्तरवलोऽरुपताया वायहृष्ट 'तुष्टुष्टु', 'तुष्टुष्टु', 'तोर्' इत्यापि सर्ववावेत्र वायहारु चर्यातेऽ

नाना क्रूरा याम् । देवन - नाहि (चर्या संख्या - १८), जोर (चर्या संख्या - ६६), तहि (चर्या संख्या - ०१) इत्यापि ।

१०) एवं वायामण्ड नाम्ना

तिन्यारु वागे यज्ञार्थक अवायाम् वायहारु चर्यायु नाना क्रूरा निरुद्योह । देवन - न नाहि (चर्या संख्या - ०८), वा जातुरे (चर्या संख्या - ०१) इत्यापि । उत्तरवलोऽरुपताया वायहारणेऽ यज्ञार्थक अवायाम् तिन्यारु वागे व्याख्या करेत्र वायोरु गठेन सम्पूर्ण । देवन - तात् ना नाऽ 'तात नाहि वा', वाति ना जाऽ 'वाति नाहि वा', तुष्टु वा वायुम् 'तुष्टु वायवे वा' इत्यापि ।

चर्या वद्यो विचित वलो तात्र वायावद्ये प्राचीय वायामारु एवं वायामहीतिरु समाक एविचयु उत्तर

क्रूरा सम्पूर्ण वयः । इत्ये एवं विचयु उत्तरवलोऽरुपताया वलो तात्र नाम्नाः-तैर्नाम्नेत्र आनोचनायाम्

एवं देवनी अप्रसर्त इत्यारु उपायाम् देवैः ।

प्रधावाऽन्ता

११) वृनिगत नाम्ना

(क) वायवाऽन्तारु देव वर्त्ते, वर्त्तन अक्षीयम् वत्ताकीर्ति देव तात्त्वे /इ/ एव ८ /उ/-एव
विविहिति वस्तुत्र विविहिते वस्तुत्र देवते वायेत् । एव विविहिति व्यज्ञयुमि दृष्टि अठिनुति त्रिविति एवि
विविहिते वस्तुत्र विविहिते वस्तुत्र देवते वायेत् । उत्तरवलोऽरुपताया विविहिते वस्तुत्र विविहिति व्रायृ देवै
वनद्वै तत्त्वे । तत्त्वः अठिनुति, वा जाती उपतायारु तात्त्रे वस्तुत्र, ता उत्तरवलोऽरुपताया उपतायाम् वस्तुत्रै ।

১৪৮

८९ अन्दा > प्राची असा > प्राचीम व गधावारला आहि > ताढी आज, हिन्हु उत्तमवरोत्तम उपतावायु आहि।
९० दृष्टिक > प्राची देवकीय > प्राचीम वारला देविला > गधावारला देविका, देवि, हिन्हु उत्तमवरोत्तम उपतावायु देवि वादेविया।

(६) यद्यपी एक वनेक दोहेइ पुराणात्मतेर कठो शकेत्र वादिनित तुन्हसर /व/ दीर्घत
/वा/-ते तुम्हाक्तित हय्येहे। येहव- अग्न>अहर>अज्ञ, अठिष्ठ>आठिष्ठ यहासाव>याहासाव
इत्तादि। उत्तरवलेर उष्टायात्मे शुभायात उवित काहुले शकेत्र वादिनित /व/ वनेक दोहेइ /वा/-ते
तुम्हाक्तित हय्यु। येहव - अवश्च>अवश्च, अहासव>याहासव, अह>याह इत्तादि।

(୯) ଉତ୍ତରବଳୋତ୍ତ ପେନାଧାର ବାହୁ ଏହି ଦୈଶ୍ଵରୀ ହୀନ ମାନ୍ୟତିକିରଣ କାହୁଦିଲ ଦୀର୍ଘତା । ଏହି ଦୈଶ୍ଵରୀଟିଙ୍କ ମନ୍ତ୍ରରୁତଃ ଯଥାର୍ଥାତ୍ମା ଦେବତାରେ ଅନୁଷ୍ଠାନ ଦେବତ- କୁମୁଦ > କୁମୁଦା, କର୍ଣ୍ଣିକ > କାମତା, ତିର୍ଯ୍ୟକ > ତିର୍ଯ୍ୟକି ।

১২১ <১> রামপাতি সাম্পর্ক

(ক) 'ইল', 'ইব', প্রতিযোগি কুস্তি চিম্বাখনের বিশেষণ হিসেবে বাবহাত মুকোটোর অনেক দেখতে লক্ষ করা যায়। উভয়বক্ষের উপরাংশে এই জাতীয় বাবহাতের মুকোট পুরু। যেমন-

(୯) ପ୍ରାଚୀନ ସାହାରୁ ପ୍ରତିକାର୍ଯ୍ୟ ବିଭିନ୍ନ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ଏହା ପ୍ରାୟ ଅଣିବ ଠିକ୍ ହେଉଥିଲା ନାହିଁ ।

(१२) गुरुवी वारासंग्रह लाइब्रेरी

ପ୍ରାଚୀନ ବାକ୍ସାରୁ ମତ ସହିବାକ୍ସାରୁତେ ଏକାର୍ଥକ ଅଧିକ୍ଷମ ଅନେକ ଦେଶରେ ଲିଖାରୁ ଥାଏ ବାବୃତ୍ତ ହଦ୍ୟ ପାଇଲା
ନ ଦେଖାଇ ଗଠିବ ଗଣ୍ଡିବ କରିଲେ । ଦୋଷ- ବା ଡିଉରୀ ବା ସୀଦୀ ବିଳି ରାଧା ମହିମରେ (ଶ୍ରୀକୃକାରୀର୍ଥ, ରାଧୀଜୀବନ) ।
ଉତ୍ତରବଜେରୁ ଉପତ୍ତାବ୍ୟ ଯେ ଏହି ଦୈ ଶିକ୍ଷା ଏଥିର ବର୍ତ୍ତାବାନ । ତା ଇତୋପୂର୍ବେ ପ୍ରାଚୀନ ବାକ୍ସାରୁ ଶଙ୍କା ବାଲୋଚ୍ୟ
ଉପତ୍ତାବାନିରୁ ଆଶ୍ରମ ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିପିଲି ହଜୁର ।

প্রাচীন বাংলার এক পদাবলোর বিশর্যগুলি ও তার সম্পর্কে পদ্ধতি রচিত। তাই পদাবলোর এমনিয়ামন্ত্রিত সঠিক বহিষ্ঠ এই বিশর্যগুলি থেকে পাওয়া যায় না। অতএব এসে এও পদাবলোর

सज्जे उत्तरवदेश उपतावार मन्दिरमालीका तुलनात्मक विचारे देखी सूर्यमन्तर इन्द्रियों का सूर्योग देखें।

प्राचीन ओमवाक्यार्थ सज्जे उत्तरवदेश उपतावार एवं तुलनात्मक विचार मूलतः प्रकट सामूहोर उपरे तिति कठोर कर्त्ता हैं। वाचकत्तु अमृतमाय चालाने उत्तिष्ठित सामूहासूत्रगुलि बाढ़ाओं सामूहोर आठवें सूत्रों का विचार सक्तवः।

देखा वाले देखे प्राचीन ओमवाक्यार्थ उत्तिष्ठित देव लिङ्गोगुलि, या बाध्यिक वाक्यार्थ अविकाश जैते तुम्, या वाक्यातावार ऐतिहासिक उपासाने गर्वव शित, ता उत्तरवदेश उपतावार अविकाशीय देव लिङ्गो। एवं ६ प्राचीन एवं ६ ओमवाक्यार्थ वाक्यो अद्येत देव लिङ्गो। उत्तरवदेश उपतावार देखें आविष्ट इते गात्रे, एवं य सक्तावनाओं वाले। सूक्तार्थ एवं उपतावार विचारमध्ये विद्युतवणे अनुसर इन वाक्यार्थात्तु उत्तरवदेश देवोदिक वाक्या विसर्जने वालावै तुम् दूर इत्ये वा वा प्राचीन ओमवाक्यार्थ वालेक व वाविष्ट देव लिङ्गोऽत्र आविष्टावै तुम् गर्वव इत्ये वा, एवं सूक्ता प्राचीन ओमवाक्यार्थ वाक्यातावार विवर्तनेत्र इतिहास गुणज्ञ इत्ये उत्तरवदेश वाक्यार्थात्तु उत्तरवदेश लिङ्ग वाचिकत्तम्या वाक्या वाचसाहृष्णे त्रु इत्यावै यत्, ऐतिहासिक उद्योगमेत तापिदेश उत्तरवदेश उपतावार विचारमध्ये उत्तरवदेश उत्तरवदेश वाले।)

अपूर्व कार्यालये उत्तरवदेश उपतावारके वर्तमाव गतेवना विवर्त्ये त्रु आलोचा विषय तिसेवे ग्रहण कर्त्ता हमेहेह। एवं उपतावारा एवं ६ उत्तरवदेशिके वाचकप्रयोगीत इतिहास अमृतमाय, उपतावाराति त्रुविष्टु, त्रुपत्तु एवं ६ ओमविचारमालीका त्रितीय विद्युतवणे एवं गतेवना विवर्त्ये त्रु आलोचा विषय।

उत्तरवदेश एकाधिक तावा-सम्मुदायुर तावा व अवास कठोर। व्याधिवर्ता गूर्वती उत्तरवदेश सूक्ताचीन वाल देखें तिरुत-डीवातावी क्रोत-त्राता, देख इतापि सम्मुदायुर तावा ताहलीय वार्यतावी ताववै६३१, वलिया, देवीष्टु, लामिया, लैवर्ति, वृश्चिमाय इतापि सम्मुदायुर गहाव वावस्मृदो व अवास कठोर वासदेश। व्याधिवर्ता गूर्वती वाल देख वितापि, वाम्मुदायुर वाला एवं अवेहात्तु गूर्वती वाल वै६४७३७ वाक्यार्थान्वेत्र त्राप्तीवेतिक विकाव इतापि वाल विष्म वै६४८५ त्रुपुरुष उत्तरवदेश एसे उपरिविक्त इत्येहेह। वासदेश एवं विष्म जनसम्म छित्र देख वै६४८६४५, विचारपुर, वृत्ता इतापि जलात्तु वासिना विल तावदेश तावा उत्तरवदेश त्रुपुरुष वै६४८६५१ इतापि सम्मुदायुर तावागत्तु देव सामूहा ग्राह देखें वज्जेते तावा। किञ्चु उत्तिष्ठित जलागुलि बाढ़ा अवासवा तावा देखें वासदेश जनसम्म छित्र दूरा वाहित तावा अकोहृहै उत्तरवदेश उपतावार देखें व्यक्तम्य। अब या सम्मुति वासदेश जनसम्म छित्र एवं वै६४८६५१ तावा, वै६४८६५१ इतापि विक देखें उत्तरवदेश गूर्वती वासिवासी ताववै६३१ इतापि सम्मुदायुर तावा एवायु इते तावावै। किञ्चु वै६४८६५१ एवं ज्ञानीय घान्यवेत्ता विकेदेश गाहिवाज्ञिक औ सामाजिक वित्तमाले देख तावा

वावहार द्वारे बड़े ताह शहरा पूर्वक अविवासीदेश यूनिट लोधाड नामा विषये पार्किंग करा दायु। जहाँ विचारे पूर्ववजा द्वारे जागेह जमशह किंतु एवं १५प्र० तावहक 'वालाजी'-इसकर्तुलूक करा दाय। गोप्यदेश वालीवजा पूर्ववजी उत्तरवजा र पूर्वक अविवासीदेश ताहा इतावाताहिकदेश घटे 'कालहृषी' उपतावातु असर्वत।

मूलहृषी देश वाजेद्ये उत्तरवजा असर्वतः तिवटि वाह-समुदाय वर्णयाद। एवं वाह-समुदाय गुनि हैति १५५० तिवुठ-टीवातावी, (मुहे) कामहृषी उपतावातावी एवं १५५१ तिवटि वालाजी उपतावातावी। शहीद्यु देश विषये ये श्रुतिहृषी वाह-समुदाय उत्तरवजा जनसंख्यार मिक द्वेषः सर्ववृहद् एव १५५२ तिवुठ-टीवातावी वृहद् देशहो गोहीन असर्वत भोठ-हाता, येत इतावि समुदायके वाह निजे अविवासी हिस्तेवे सर्वतिवा ग्राउन। एवं शहीद्यु तिविते श्रुतिहृषी वाह-समुदाय ताहा कालहृषीहै आवोचनाह विषये हिस्तेवे विर्वाचन करा दायेह। वाहाहे वाहुल द्ये (उत्तरवजा र उपतावाता वन्ते तावा-ताहिक ताहा कालहृषीहै दुलिये वाजेन।)

उत्तरवजा र गोही जेता छाया उत्तरवजा र वार्देते असामे गोहालयाह १५५३ कायहृग देशार लिये एवं १५५४, सामुठिक वाखामदेशह ताहपृह, दिमालपृह, एवं १५५५ जेतार लिये एवं १५५६, देशार वाहा एवं १५५७ जेतार लिये एवं १५५८ विषयार वृनियु जेतार उत्तर-पूर्वदेश कायहृषी उपतावा ग्रहणित। जेता-सहीद्यु १५५९ उपतावाद मृप्रहेत जनव वाखामदेशह अवात शहृह दाया उत्तिपित, कामहृषीहै निजे अवातवे अमुम्यान चावहेवा हायेह। एवं ताहे मृप्रहीत उपतावाद मृप्रहेत वावायाता समर्थक मृप्रहु देश निजे दोनो दोनो वाक्तवे एकाधिकवाह अमुम्यान चालिये विषयद्वित शब्दात देवी दाया हायेह।

पर्यावरण एवं मृप्रहीत उपतावाद मृप्रहेत उपतर तिति करे, त्रुवावतः वर्तवायुतक (Descriptive) तावातहृत्र सूख अमुम्यान, पूर्वहृषीहै र तावहक यदायव दुला निये वाजोता उपतावाति वृनियु, दृष्टियु, एवं विवासप्रीति एवं १५५१ लकडामाह असर्वत विषय वित्तेवे करा दायेह। एवाहा उपतावाति एवं १५५२ ताह वाचिकदोक्षीत इतिहास, निकट वा गाहितिक वाखार गहो नाम्या-त्रैनाम्या, ताह अवात एवं १५५३ समुदाय तितित वृष्टेवे चिता इतावि विषयहे आवोचनाह असर्वतुलूक करा दायेह।

वाजोता उपतावाति वायकतुल समर्थक विहर्व द्येवन जायेह, तेष्व विदेहे विहर्वत्र सदावावत एवं विषयामाधार काह। उपतावातिके तद शुभीति कुमार चट्टोपाधाय, तद सुहृदार देश शुभ लाया-ताहिक ताहा कायहृषी अतिहाय तितित करेहेव। वावात देश विषये अर्थ वावाय द्युमात्रशन, तद सुधीह तुषात्र कराह, तद इतिहास चतुर्वही, त्री उलेह वाय वर्ष शुभ तिष्ठाविसज्जा एवं उपतावाके एकाधिक अवाते 'जालव एवी उपतावा' वाये अतिहित करेहेव। एकादेश तावातहृत्र निजिते वितात वास्तवे दुति अतिवाहै श्रुतिहृषी वा वर्तवियुता असर्वत असर्वत विषये वाये। वाहाहे एवं वावातिते एवं

कुहन कहा होक वा केन, ताकाहिन्नुह विचारे ता प्रश्नाचीत उवे ना। अब या एवे शूकिंडली विच्छु विचारे करते हाथना तावा वा उपतावार जनाई नम्बन्त प्रकार विचर्त्तु अलीत, उपयुक्त जान्नो अति धैर्य पर्यंत हमुदो देखे पाओहा याहे ना। गढ़म्ह विषम्ह लापातिं लापातिं लापातिं (socio-linguistics) - एव एनाहिन्नुह। एकाहमे बाधक तुल सम्हित विचर्त्तु उद्देश वा निच्छु, वाख्या उपतावासम्ह उपतावने जाते अनुसन्ध आकालिक वा जीव काठामोह तस्ते न्हीताह उद्देश विच्छु, वर्त्याव विवर्णे आलोचा उपतावातिके 'उत्तरवाले उपतावा' वजे उद्देश कहा हम्मेह। इताई वाहुता, एव जातीम्ह उद्देश उपतावातिके बाधक तुले जाते अ तम्ह जाहना अ तिष्ठेत्तु देखातक नयु।

व र्त्याव गदेवण्ट-कर्त्ति आधार एक प्रचेष्टीह वज, एकाव वजाले कुल हयु। शूकाद्याम्ही वहु याम्हेह नम्हयोगिता एव ५ उ२ साहे एवे गदेवण्टा प्रकाळे वाञ्छवायुम् नम्ह उम्हेह। एकमवज्जे त्रावह ६षी नम्हाजेर याम्हेह वाधार आक्तिक तृतज्जाता प्रवदेह जावय करि। जेवना, एव तावायु गदेवण्ट वापाहर एवे नम्हाजेर याम्हेह वैवकटा, नम्हयोगिता एव ६ व्यतःकृत ७२ साह आधार प्रवद द्युम्हाह उ२ स।

उत्तरवाल विश्विनालच्छुह वाख्या विचारेत्त अध्यापक डॉ पुलिम दास, विर्देशक विश्वेवे गदेवण्ट-कर्त्तेर प्रतिति न्हत्रे अम्हात अ त्रावर्ण एव ६ विर्देश विच्छु अधिके अदेव ऋगवाले आव ना कर्त्तेह न। एवे उन विषम्ह-मूलाव विश्वेवा नयु।

एवे विच्छु नम्हयोगिता खेद्येवि विकागीत्य अन्याना अद्यापेत्तु कर्त्तेह। विश्वेवतः अध्यापक डॉ पुगम्ह दृष्टिर कुस्तु यहाशम्हेर नम्हे आलोचना करो नावा विच्छु उपकृत हम्मेह। एवे विचारेत्त अ ग्राम्य अवाधक गदेवण्टु मूलिक तक्तीताप्त वैष्णोतार्या यहाशम्ह नारीकृत अवहाता नम्हेत्त गदेवण्टमत्तिर वाम्पेत्त व्यात्ते एवे औलावाय गदावर्ण विच्छु, गदेवण्ट-कर्त्तेर मूर्गम्हाता अ तिरुम्ह करते देवतावे शाहाया कर्त्तेह, ता एव कर्त्तायु विकाम्हुकरा। तातु प्रति आधार विषम्ह प्रमाण विवेद्य वर्ति।

गदेवण्ट-प्रचेष्टीयु अनेक नम्ह नावा नम्हम्हा ए उत्तिनताह नम्हूनीव हठते हम्मेह। कलाकाता विश्विनालच्छुह तावातिं विचारेत्त वर्त्याव यम्हात-वर्त्यावक डॉ पुलास चट्टोगाम्हायु एव ६ नित्ती विश्विनालच्छुह ताहिन्नीयु तावाशम्हेह इवीकृत अध्यापक डॉ शिलिम नाथ यहाशम्हेर सृदम्ह अम्हाता ए नम्हयोगितायु एवे नम्हन्त नम्हम्हा ए उत्तिनताह अदेवथावि विज्ञप्त घट्टेह। एसेह आक्तिक तृतज्जाता जावाहे।

दिवहाटा यहाशम्हाह अ विवाही नैकृत विष्णुक शूम्हाल शूम्हात निएह नाम्ही यहाशम्ह लौत विज्ञन्य वाधक तुल विषम्हक गदेवण्ट-कर्त्तेर वाक्तुलिपि वावह हात्तराव वम्ह विष्मेह व वातु जागावे त विकापीवाहा

कर्मजोह कथांशक डॉ दत्तव डी द्योहय नाहा नहुव राह कर्मजोह ठाँह विजय मुलावान प्राप्तानि । ठाँदेर
मूँख्यजेह आधार कृष्णजा विजयम करि ।

न्युग्न कठि आपारु न इस शुद्धेहुआ विजयही कीमही शूद्धेशुद्धी देवहिं । ठाँह नृ तिस९त्रहित,
एवं उपडावारु अधुनालूपु उपावावस्थु आधारु गदेवणा-कर्मज शुलावान सहायक हड्डेण । एवं
सहयोगितारु तथा ठाँह कृष्णजा आधमेह शुक्र एकान्तरावे वयांत्रह । देवना, ठाँह काहे
आचीमुहारु पूर्व आवुक्षामिक कृष्णजारु जेये वाबेक देखी ।

ठाँह-समीक्षारु काहे कर्मी कर्मजोह उक्तकर्मजोह वाईहेन वासाप, देवगल ओ विहारेह प्राप्तगजेह
वगणित दायुव । ठाँदेरु आक्षय, आहाय ओ सहयोगिता वा खेळ एवं गदेवणा-कर्मज वास्तवाच्युत सक्षव
हल वा । शुद्ध गदेवणारु वास्तवारेह वयु, वीमदेह वास्तवारेह ठाँदेरु प्रलाभ आर्द्ध आयि उपसीधवा
आनुभव कर्त्तव्य ।